[illegible]

श्रीरामकलेवा

मुन्शी लालमणि साहब विरचित

जिसमें

श्रीकोशलानन्दन दशरथकुमार परब्रह्म परमेश्वर सच्चिदानन्दघन श्रीरामचन्द्रजी महाराजने अपने चारों भाइयों सहित श्रीजनकजी महाराज के यहां विवाहोत्सवमें लौकिकरीतिके अनुकूल जनकपुरकी स्त्रियों से लीलाविलास सुन्दर हास्य इत्यादि किये हैं॥

सातवीं वार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

अगस्त सन् १९०४ ई०॥

१ जुज़ ६ वर्क़

श्रीगणेशाय नमः ॥

रामकलेवा

सोरठा ।

होत बुद्धि परकाश धरत ध्यान शङ्कर सुवन ।
पूजत मनकी आश जासु नाम मुख लेतही ॥
श्रीगुरुपदधरिध्यान करौंकथाहरिगुणविशद ।
द्रवौ सो दयानिधान निजसेवक जनजानिकै ॥
जयजयजय सुखधाम रमारमण सुखमासदन ।
अधमउधारन नाम कहिनर भवसागरतरहिं ॥
नायशिवाशिवमाथ चरणकमल उरधारिकै ।
कहौं रामगुणगाथ करौ कृपा करुणा अयन ॥
वन्दौं अवधनरेश त्रिभुवनपति जाके सुवन ।
करत प्रशंस सुरेश अर्द्ध सिंहासन देइकै ॥
वन्दौं चरण विदेह धन्यसुकृत कीरतिविमल ।
सदा रामपद नेह निज हिय राख्यो गोइकै ॥
जयजय पवनकुमार दुष्टदलन संकट हरण ।
कीरतिजासुउदार श्रीपतिनिजमुखआपकहि ॥

दो० विघ्नहरण मंगलकरण वरदायक गुणखान ।
कथामधुर सियरामकी कहतसुनत कल्यान ॥

सुमिरि गणेश सरस्वति माता । सिद्धसदनअभिमतफलदाता ॥
शैलसुतासुत जनक निहोरी । करिहौं कथा यथा मति मोरी ॥
जो सुनि होइ उमङ्ग उछाहू । लोकलाहु परिणाम निबाहू ॥
जनकभवन जब रामकलेवा । भ्रातन सहित कीन्ह सुखदेवा ॥

हासविलास परम सुखकारी। कीन्हजोहिलमिलसरहजसारी॥
है ससुरारी सुखकी सारी। ताते जग लागत अतिप्यारी॥
सोइ रघुनाथ चरित उरलाई। कहौं यथामति करिचौपाई॥
रामचरित्र विचित्र सुहावन। शमनसकलदुख मोदबढ़ावन॥
पढ़ै पढ़ावै प्रेमसों जोई। प्रेम रामपद पंकज होई॥
दो० प्यारी लगै ससुरार की सारी सरहज हास।
नारीनागरि जनकपुर हिलमिल कीन्ह विलास॥
सो० शिवमूरति उरराख वरणौं हरिगुण विशदयश।
पूजै मन अभिलाख पैहैंसुख सुनि सुजनजन॥
जय गणपति जयजय गुरुदेवा। सुरमुनि मनुजकरत पदसेवा॥
जय महेश हरि परमसनेही। हरभजैं राम राम भजैं तेही॥
अहै प्रीतिकी रीति सदाहीं। अतिअटपटकहिजातसोनाहीं॥
जेहिविधि जनकभवनरघुनन्दन। कीन्ह कलेउ भक्तउरचन्दन॥
दियो विपुलसुख सरहजसारी। सो सब भेवकहब विस्तारी॥
ब्याहु उछाहु सिया रघुराई। सो उत्साहु कहो नहिंजाई॥
क्षणमहँ बीतिगई सब राती। रागे रँग सब भूप बराती॥
भोरभयो सुत जनक बोलाये। सखनसहित लक्ष्मीनिधिआये॥
करिप्रणाम चरणन शिरनाई। बैठ्यो ढिग अनुशासन पाई॥
दो० सुतविलोकि बोले जनक बेगिजाव जनवास।
कहियो वचन विनीतयुत नृप दशरथके पास॥
सो० कहियो विनय सुनाय जोरिपाणि परणामकरि।
पठयो चारिउ भाय करन कलेऊ के लिये॥
यहसुनिशीशनाय लक्ष्मीनिधि। भरउरमोदउमंग विविधविधि॥
सखन समेत मन्द मुसकाई। चढ़िचढ़ि तुरँग चले हर्षाई॥

जहँ राजत नृप दशरथराई। सुखसमाज सब साजबनाई॥
बैठे सकल सभा रघुबंशी। तेजवन्त भूषण कुलहंशी॥
चोपित चोबदार परचारैं। बन्दीगण वरविरद उचारैं॥
सुखदायक गायक गुणगावैं। सुनत श्रवण मन हर्ष बढ़ावैं॥
मधुर मधुर स्वर नौबत बाजै। सोसुनि शब्द गगनघनगाजै॥
कलि न दिखावतहयथिरकावत। कामबाजिको लाज लजावत॥
जात चले मग करत तमासे। पहुँचे जाय निकट जनवासे॥

दो० उतर बाजिते सखनयुत श्रीनृप जनककुमार।
सुतन सहित अवधेशको सादर कीन्ह जुहार॥

सो० कीन्ह तुर्तसतकार लक्ष्मीनिधि मुख देखिकै।
निज समीपबैठार नृप दशरथ गहि हाथकर॥

भ्रातनसहित रामछवि देखी। लक्ष्मीनिधि भयोमोदविशेखी॥
सखन समेत बहुत सुखमाने। उनहुन लखिदृग रामजुड़ाने॥
तब लक्ष्मीनिधि उठि करजोरी। बोले वचन सुधा जनु बोरी॥
चारिउ भ्रातन आयसु दैये। करन कलेऊ हेतु पठैये॥
सुनि मृदु वचन प्रेम रससाने। कोशलपति तब मनमुसकाने॥
चारोकुंवर बोलि नृप लीन्हा। बेग बिदा समध्याने कीन्हा॥
जनकनगरकी जानी त्यारी। शुचि सेवक सब भये सुखारी॥
तनपुलकित मन अतिअनुरागे। निजनिजप्रभुन सवाँरनलागे॥
लै भूषण अँग अँग सब साजे। कोटिअनंगदेखि छबिलाजे॥

दो० शोभित भालविशालपर केसर तिलक रसाल।
हरषैं सुर देखैं गगन बरषैं फूलन माल॥

सो० काननकुंडललोल मणिनजटित दामिनिनद्युति।
मोती लगे अमोल हिलैं कपोलन आयकै॥

सुवरण ताग पाग नवरंगी। बांधी शिरन पेंच तिरभंगी॥
छवि कलँगी अतिरुचिर बनाई। कलिनकलितद्युतिललितसुहाई॥
अतिमृदु मंजुल गौर विराजै। इन्द्रवधू लखि सुति छवि लाजै॥
सेहरा क़ुअरमणि दृग राजत। देखत हर्ष हिये उपराजत॥
ताके कोर कोर चहुं ओरा। लागे रत्न मणिन के बोरा॥
जगमग ज्योति होति चहुँपाहीं। श्याम घटामें रवि परछाहीं॥
कचमेचक सुन्दर घुँघुवारे। जनु रतिपति निज हाथ सँवारे॥
दृग विशाल सुन्दर सुखकारे। विश्वविमोहन अतिरतनारे॥
अंजन श्याम लगेउ तेहि फेरन। डीठ बचावन जनु चितचोरन॥
दो० अरुणअधरदशननदमक जनुशशिकिरण प्रकास।
शुकनिन्दक नासा ललित मन्द माधुरी हास॥
सो० कुन्दनवरण कपोल छवि उपमा नहिं जात कहि।
बोलन मृदुल अमोल जनु वरषत माला सुमन॥
अतिविचित्र तिरभंगी भौहैं। जेहिविलोकि सुर नर मुनिमोहैं॥
जगमगात सुन्दर तनु श्यामा। मणिनजटित केसररँग जामा॥
कोरन छोरन लागे मोती। दमकतदमक मनो रविज्योती॥
कंध सुभग पटुका सुखकारी। सोहतमोहति लखि नर नारी॥
कण्ठमाल गजमुकता छाजै। सुवरणमणि की गुंज विराजै॥
कठुला मंजु सुकंठ सोहाई। जाते जाइ न वर डिठ पाई॥
भुज अंगद अनुपम नग लागे। सुर नरमुनितेहिलखि अनुरागे॥
कनक कड़े नग जड़े करमाहीं। सो छवि गड़ी मदन मनमाहीं॥
कर पहुँची बांधे सुखदाई। मन युबतिन के लेत चुराई॥
दो० जगमगातद्युति छवि ललित श्याम सलोने गात।
मनो छटा विद्युत लता श्याम घटा छहरात॥

सो० प्रभु उर मंजु अमोल बैजन्ती माला लसत।
लेत सबन चित मोल बिन दामन जो देखहीं॥
कर मुद्रिका अधिक छवि देई। मन युवतिन देखत हरलेई॥
करकंकन कुसुमित रँग डोरा। मानौ यंत्र वसी चित चोरा॥
फेंटा पीत कमर सों बांधे। कोर किनारिन मोतिन साँधे॥
पीतवसन तनु सोहत धोती। कोर छोर गूंथे गज मोती॥
पीतवरण शुभ सोहै सरही। वर्ण छबिन वरणत मनहरही॥
पद सरोज लागेउ शुभ जावक। चुम्योत्रियनउर जनुशरनावक॥
जड़ित रत्न सोहैं पग पनहीं। युवतिन देव बनायो तिनहीं॥
देत बनत पटतर कछु नाईं। जहँ दूलह रघुनाथ गोसाईं॥
लालमनी किमि कहै बखानी। त्रिभुवननाथ रूप छवि खानी॥
दो० चारौ दूलह देखिकै नभ सुर बरषैं फूल।
नाकनटीनिरतैं थिरक तन मन धन सुधि भूल॥
सो० राम रूप गुण खान सब उपमा फीकी लगै।
को करिसकै बखान दूलह त्रिभुवननाथ को॥
इमि सज सब अवधेशकुमारा। भये छैल तब अश्व सवारा॥
कर बनाव सब साज अमीरी। जात बतात खात मुख बीरी॥
और हते जे रघुकुल बारे। ते प्रभु वै प्राणन ते प्यारे॥
चढ़े तुरंग संगमा जेऊ। राम रङ्ग मतवारे तेऊ॥
राम वाम लक्ष्मीनिधि सोहैं। हिलमिल बातैं करत हसोहैं॥
चोपदार बोलैं परशंशी। लै लै नाम भूप रघुवंशी॥
जे हय पर राजत रघुनन्दन। प्रकटनाम जगहै जगवन्दन॥
ताके गुण छवि कहँलों कहिये। पटतर ललित न खोजे पैये॥
जासु बिलोकिलजितरविबाजी। देखत तासु होत मन राजी॥

दो० चंचल सब दूषणरहित भूषित भूषण अंग।
ता अनूप छवि देखिकै लाजत वाजि अनंग॥
सो० चपलचलै चहुँओर छत्रशिखा शिर ढांपिकै।
लागे मोतीकोर जड़ित जवाहिर जीनपर॥
माथे पाणि चन्द्रकी खौरी। जनुरवि शशि बैठे यकठौरी॥
तनिन मणिनसों गूंथी चोटी। उपमा पुषन किरन है छोटी॥
जटित लगाम दाम बहुफेरी। करिन सकत सम कुंदनढेरी॥
सुवरण कलँगी ललित सुहाई। मणिमाणिकनगजड़ितबनाई॥
खचितहमेल कण्ठबिच मेली। त्रिभुवनछवि इकठौरसकेली॥
गज मोतिनके परे सड़ाके। तिनऊहैं तिहुँलोक तड़ाके॥
पेटी सुवरण तार लपेटी। मनो काम मन लेत चपेटी॥
पूंजी पटा छटा छहराई। कामलटा मनमाहिं लजाई॥
जेरबन्द मन बंधन फन्दा। तंग सुरंग किरन जनु चन्दा॥
दो० पांय पयँजनी पायकै दरशावत है रूप।
छकित होत सब देखिकै शोभाअमित अनूप॥
सो० परी पीठ गजगाह अतिविशाल मृदु मनहरण।
दिनप्रति देखन चाह उमड़ि रहत दृगकोर में॥
परीं रकाबैं जनु विधुघेरा। दुमची दमक करत चितचेरा॥
कटिपीनी खीनी खुरथालैं। बँधी नवीनी नाल रसालैं॥
फफकत फांदत हैं चहुँओरा। थिरकत निरतत मानौमोरा॥
जित रुखपावै उत पहुँचावै। क्षणआवै क्षणमा फिरिजावै॥
पवन समान उड़त नभमाहीं। राम रजाय देत पै नाहीं॥
लेत उतालै सिंह उछालैं। करत समुद्र को एकै फालैं॥
जल थल अनिल अनलपैजावै। उरमा शंक तनक नहिंलावै॥

जबै धरापर ते उठि दापै। रवि बाजी निरखत उरकांपै॥
धावत पवन छुयेनहिं पावै। खगपतिहू को गर्व गँवावै॥

दो० नाम समुद मुद देतजन तापर भरत विराज।
दाहिन दिशश्रीरामके चपल चलत गतिसाज॥

सो० कबहुँक नभपर जाय सुरन छकावत विविधविध।
अनुपम कलादिखाय कबहुँक फिरिआवतअवनि॥

भरत कुँवरको बाजि रँगीलो। अनुपम कलादिखायछबीलो॥
छमकत चलत लेतगति बांकी। हर्ष बढ़ावत देहगझांकी॥
लेत चौकड़ी भरि भरि टापैं। होयँलजितचपला लखझापैं॥
रोंकतबाग बहुत रिस पावै। गर्वसमेत मुरकि तब आवै॥
चम्पा नाम जक्क उजियारा। रिपुसूदन को अश्वदुलारा॥
कूदत फांदत करत तरंगा। निरखत मानो मोर कुरंगा॥
सब समाज के आगे जाई। कोकहिसक शोभा अधिकाई॥
हाथ उठावत यह गतिहोई। कई हाथ उड़ जात है सोई॥
बार बार कर फेरि दुलारैं। लै लै नाम चूमि चुचकारैं॥

दो० चुचकारत दुलराय कै ताहूपै न जुड़ाय।
रिसवशहोइ अकाशतन हेरि हेरि हेहनाय॥

सो० हेरतकान उठाय चंचल चपल दशौदिशा।
धरत धरणिगनिपाँय बारबार हेहनायकै॥

लषण लालको बाजि अनूपा। लाखीनाम विदित सुखरूपा॥
बाँकोनिपट चपल अति सुन्दर। उड़उड़ जात गगनते ऊपर॥
परत न पग ताके महिमण्डल। क्षणक्षितिऊपरक्षणरविमण्डल॥
क्षणमा छमकि छमकि गतिराचै। मनौ कुरंग मोरगति नाचै॥
उछलत कूदत गगन उड़ाई। परयों श्रीनिधि हयपर आई॥

उचित विचार हँसैं हर्षाहीं। रामौं मधुरमन्द मुसकाहीं॥
उर अकाश गतिकरि मनहरणी। सुरनछकावत आवत धरणी॥
तोप तुपक छूटैं तहँ जूटैं। समर मांझ वीरन रसलूटैं॥
देखि प्रताप तेज बलरासी। जकसे रहे सब जन पुरवासी॥
दो० देखतही मनवश करत बिन दामन बिन मोल।
ताकी छवि गति को कहै घोड़ा बड़ो अमोल॥
सो० धरत अवनि जब पाँय मानौ फूलन से झरत।
अद्भुतगतैं दिखाय करत तमाशे जात मग॥
तकि तुरंग की चंचलताई। लषणलालकी निपुण चढ़ाई॥
निमिवंशी रघुवंशी जेते। छकित भये सब देखत तेते॥
राम आदि जे राजकुमारा। तेऊ लखि भयो मोद अपारा॥
रीझि रीझि तहँ सब सुख पाई। लषणलाल की करत बड़ाई॥
इमि मग होत विविधविधि हासा। करत परस्पर मोद विलासा॥
सुनि बाजन रव उठि २ धाईं। युवती निकरि पवँरिपर आईं॥
कोउ २ चिकन झरोखन लागीं। रामरूप देखन अनुरागीं॥
कोउ २ निरखि राममुख शोभा। भरीं सो प्रेममगनमन छोभा॥
कोउ घूँघटपट खोलि निहारैं। देखि राम छवि सुरति बिसारैं॥
दो० लैकर ठाढ़ीं आरती कोउ त्रिय परम सुजान।
देखत वरशोभा सुभग रामरूप सुखखान॥
सो० निज सूरति सुधि त्याग माधुरि मूरति में मगन।
लालमनी सुखपाग प्रभुमूरति लखि सांवरी॥
कोउ त्रिय दूलह रूप विलोकी। इकटक रही नयनपट रोकी॥
एक सखी बोली मृदुबयना। ये सखि जात जनककेअयना॥
लक्ष्मीनिधिको जनक पठायो। करन कलेऊको सँगलायो॥

रँग भीने रघुवंशी बारे। नृप दशरथ के प्राणपियारे॥
धनि बड़ भाग हमारे प्यारी। जो भरिनैनन लीन्ह निहारी॥
नतु दुर्लभ सखि दर्शन इनके। कहँ हम कहँ नायकत्रिभुवनके॥
भागसुहाग धन्य नृप बेटी। जो प्रभुवै मिलिहैं भुज भेटी॥
बोली अपर सखी हर्षाई। भलीबात विधि आजुबनाई॥
चलिये जनकभवन अतुराई। हँसिये हमहूं इन्हैं हँसाई॥

दो० इमिमृदु करत बतकही गईं प्रेम वश वाम।
सुनि मुसकात अनुजयुत कृपासिन्धु श्रीराम॥

सो० जातनचावतबाज छविछावत करुणायतन।
त्रिभुवनपतिशिरताज सुखशोभाको कहिसकै॥

बाजन बाजत विपुल सुहावन। सुखदायक सुन्दर मनभावन॥
चोबदार जूंगर वर भाखैं। लैलै नाम भानुकुल शाखैं॥
यहि विधि चारो राजदुलारे। प्रमुदित जनकनगर पगधारे॥
सिंधुरमणिमय चौक सँवारी। ठाढ़ी तहँ रघुकुल असवारी॥
नगर सुआसिनि औ पुरनारी। पायरजाय सिया महतारी॥
कञ्चन कलशसाजि शिरऊपर। गावत मङ्गल गीतमनोहर॥
साजि आरती कंचन थारी। परिछन चलीं हर्ष उरभारी॥
जायसमीप निहारि निहारैं। लखिछवि राम तोरि तृणडारैं॥
छकित भई वरवदन विलोकी। थकित रही ठाढ़े पगरोकी॥

दो० रामरूप रँगमें रँगी लखिदूलह सुखसार।
तनमनकी सुधि कछुनहीं कोकरै मंगलचार॥

सो० धीरजधरेउ बहोर प्रेमपयोनिधि मगनसब।
रोकि वारि दृग कोर परिछन करैं मुदितमन॥

प्रथम उतारि मिथिलापति बारे। गहि करचारौ कुँवर उतारे॥

राम अनुज युत सखन समेता। पाणिपकरिलैगयो निकेता॥
द्वीप द्वीपके सकल महीपा। बैठे जहँ तहँ जनक समीपा॥
बैठे सभासकल निमिवंशी। एकते एकरूप सुर अंशी॥
चोबदार जंगर उच्चरहीं। मधुरस्वरन नौबति तहँभरहीं॥
तहां जाय रघुवंश कुमारा। अनुज सखनयुतकीन्हजुहारा॥
देखत उठे सबै नरनाहा। तनपुलकित मनपरमउछाहा॥
गहिकर जनक निकट बैठारे। निरखि रामछवि भये सुखारे॥
दृगसेहरा शिरमौर विराजी। दूलह भेष देखि सबराजी॥

दो॰ तहां कछुक दरबारकरि दशरथ राजकुमार।
पाय रजायसु नायशिर सासु समीप सिधार॥

सो॰ आवतसुनि रनिवास रघुवंशिन के लालको।
भईमुदित मनसास सोसुख शेष न कहिसकैं॥

जहँ पिकवयना सबसुखअयना। बैठिनहां महरानि सुनयना॥
इन्द्राणीकी कवन चलावै। लखि रति रूप छोह उपजावै॥
चन्द्रमुखी चहुँओर विराजैं। लखिछविललितकोटिरतिलाजैं॥
कोउ चमरलै पवन डुलावै। कोउ आरती मंगल गावै॥
कीनखाप अतलस बहुभांती। बिछे बिछौने अगणित जाती॥
तापर मसनदगद्दी राजै। बैठि सुनयना शशि छबिछाजै॥
तेहिक्षण गये तहां रघुनन्दन। सुखसागर युवतिन मनफन्दन॥
देखन उठीं सकल रनिवासा। रह्यो न चेत भ्रमन प्रभुपासा॥
करि आरती वसन मणिवारे। सादर पंकज पाँय पखारे॥

दो॰ चार सिंहासन चार रँग चारो वर बैठार।
लखिछविछकित रहीं सब तनमन धन सुधिवार॥

सो॰ सासु मगन मनमाहिं रागरूप रँगमें रँगी।

आंसुबहै दृगमाहिं चकितरही बोलै नहीं॥

यहजब दशा सासुकी देखी। रामगुणत मनमाहिं विशेखी॥
कहा भयो रानीका आजू। पूंछतमें सकुचत रघुराजू॥
चतुर सखी चितचरित्र सयानी। बोली विहँसि मधुर मृदुबानी॥
ये तुम्हार सब गुणहैं लाला। और न कछु उर दीनदयाला॥
यह सुनि वचन धीरधरि रानी। समय सोहावन अवसर जानी॥
साँवल सूरति माधुर मूरति। सिया मातु प्रभु देखि त्रिसूरति॥
बारबार बहु लेत बलैया। तृण तोरति लखि चारिउभैया॥
चूम कपोल पर्श निज पानी। रहीरीझि बिन मोल बिकानी॥
पुनि करजोरि रामसों रानी। बोली अतिमृदु मंजुल बानी॥

दो० करौ कलेऊ लाल उठ जोरुचि मनकी होय।
यहसुनि उठेउ रामतब बंधु सखनयुत सोय॥

सो० निजकर पाँय पखार रानि सुनयना भागधन।
पदिक पटन बैठार चारौ भैयन सखनयुत॥

विविध भांति पकवान मिठाई। ताको स्वाद वरणि नहिंजाई॥
षटरस व्यंजन मधुपकमेवा। जेहिविलोकिछोभित मुनिदेवा॥
परसि सुनयना कंचनथारी। धरि आगे मृदुवचन उचारी॥
सुनौ लाल सब राजदुलारे। सेवा योग्य न भाग हमारे॥
तोषित दिनकर अंजुलिपानी। करौ कलेऊ असउर आनी॥
सुनि मृदु वचन राम अनुरागे। भूप सुवन सब जेंवन लागे॥
रानि सुनयना पवन डुलावति। लखिप्रभुरूपअमितसुखपावति॥
बूझि २ रुचिव्यंजन परसति। प्रेम मगन मनहींमन हुलसति॥
स्वाद सराहि खाय अँचवाये। तब सखियनलै पान खवाये॥

दो० बैठेसजि पोशाक तब विविध सुगन्ध लगाय।

हर्षित सुर बर्षैं सुमन उठीं अंगना गाय॥

सो० राजत राजकुमार राजभवन में हर्ष युत।
लाजत लक्षण मार जिनके हास विलास लखि॥

तेहि अवसर सुनि श्रीनिधिनारी। जो गुणरूप शील उजियारी॥
नाम प्रसिद्ध सिद्धिहै जाकर। भाग सुहाग भरी सुठि सुन्दर॥
नवनागरि यौवन मतवारी। चपला रतिहिं लजावनहारी॥
रसकिन प्रीति रीति परवीनी। गुणआगरि हरषात नवीनी॥
लक्ष्मीनिधि की प्राणपियारी। प्रीतम प्रीति निबाहनहारी॥
रूपखानि अति सुभग सयानी। निमिवंशी कुलकी महरानी॥
अलबेली सरहज सुखकारी। सुघर सुशील सनेह सिंगारी॥
राम रूपपर रही रिझाई। चंचल देखनको अतुराई॥
सखिनसंगलै उमँग बढ़ाई। तुरतै निकट रामके आई॥

दो० वदनचन्द्र अरविन्द कर विहँसति मन्दरिसोहिं।
राम कुँवरकर पकरिकर बोली तकि तिरछोहिं॥

सो० हो चितचोर किशोर बड़े चोर तुम सांवरे।
गयो सासुकी ओर सुरति हमारी भूलिकै॥

उलटीबात कहौ जनि प्यारी। आपनदोष दुरावौ नारी॥
तुमहिं छिपी सुनिहमरिअवाई। कहतबात पुनि बात बनाई॥
लाय हमैं लक्ष्मीनिधि बोली। तुमनसुनेउ ऐसीहौ भोली॥
भलो सदन तुमरचेउ बनाई। जहँ तुम्हरे सबजात समाई॥
सुनत रामके वचन रँगीली। बोली मृदुमुसक्याय छबीली॥
ऐसि रीति तुमघर रघुराई। इहां न चलिहै छैलचलाई॥
सासु सुनयना के ढिगमाहीं। देत वचनउत्तर कछुनाहीं॥
पकरिपाणि हरि हँसमुखमोरी। गैलिवाय निजभवनकिशोरी॥

चारि सिंहासन दिव्य मँगाये। चारौ चारु चारिरँग आये॥
दो० बैठारे कुँवरन सबै निजकर श्रीनिधिनारि।
बारहिबार निहारिछवि शुभआरती उतारि॥
सो० मालसुमन पहिराय विविध सुगन्धलगायकै।
निजकर पानखवाय अंचलसों मुखपोंछिकै॥
कनकखचितमणिजटितदिवालैं। जगमगातद्युतिललितविशालैं॥
बैठी सुन्दरि कियेसिंगारैं। रतिरंभालखि निज छविवारैं॥
कोउ सुमनलै हार बनावै। करणफूल कोउ कलँगिरचावै॥
कोउ ठाढ़े लै चमर डुलावै। कोउ करलै दरपन दिखरावै॥
निज निजसाज समाज बनाई। हरि सन्मुख बैठीं सब आई॥
कोउ जलतारँगि तार बजावै। कोउ सितारलै गति दर्शावै॥
कोउ उपंग मुरचंग मिलापै। देदै मुख मृदङ्गके थापै॥
कोउ करतार बीन गति छावति। कोउ तम्बूरा तार मिलावति॥
कोउ तिय पंचमराग अलापै। सो सुनि विरहिनके जियकांपै॥
दो० कोउतानको मानदै छावति तान बितान।
सो सुनि द्रवें द्रुमलता सबैं हृदय पाषान॥
सो० राजकुँवर अनुराग इमि अभिरामहु धामलखि।
परमप्रेम रसपाग सिधसरहजसों बातकरि॥
जे आई नृप नेवत हँकारी। निमिकुलकी सबराजकुमारी॥
रूपशील सब गुणकी रासी। रामसुधा दर्शनकी प्यासी॥
अति निर्दूषित तिनकी बानी। भूषित भूषण अंग सयानी॥
मृदुबोलनि अरु मन्द हँसो है। जितजावैं मुनिजनमनमोहैं॥
तिन यह सुनेउ कि चारौभाई। सिद्धि महलमा बैठेउ आई॥
तुरत तहां पहुँचीं सब प्यारी। जानि हृदय हरिको सुखकारी॥

हर्ष सहित लक्ष्मीनिधि नारी। कर सन्मान निकट बैठारी॥
रामरूप छवि देखन लागीं। दृग आनन्द प्रेमरस पागीं॥
चखभखपरे रूप निधि माहीं। कढ़ै न काढ़े कोटि उपाहीं॥
दो० मणिन मौर कलँगीरतन अतिशय शोभा देत।
राजत्रियनकी कोकहै मुनियनको मनलेत॥
सो० पीतबसन तन श्याम करन कलित कंकन ललित।
लखिशोभा अभिराम छकित भईं रहिंध्यान धरि॥
योगीयती सती तपधारी। तिनहुँनलखि निजविरतिबिसारी॥
अति बिशाल रतनारे नयना। हरत त्रियनमन बंकन सयना॥
छूटी अलकैं मुखपर लटकैं। जनु डुङ्कारे दुहुँदिशि मलकैं॥
जोहत जहर चढ़त युवतिनके। लागत जरी न बूटी तिनके॥
विकट भौंह जनु चाप चढ़ाये। मृगतिय तिनबध घात लगाये॥
मन्द हँसन जियकी जनुफाँसी। पलक नयन मानौ शरगाँसी॥
बीरनकी लाली अधरनपर। मनहुँ प्रभा दामिनि घनऊपर॥
निरखत छविद्युतिरद दसनकी। सुधिनरहततन असनबसनकी॥
झीनसो जामाअति अभिरामा। सोहत श्यामगात घनश्यामा॥
दो० दूलह मूरति देखिकै बिसरा सबै अपान।
सम्मुख वरबैठीं सबै प्रेममगन धरि ध्यान॥
सो० भईं विवश सुकुमारि मन लोभा शोभा निरखि।
तनमनदशाबिसारि चकितछकितसबरहिगईं॥
जे त्रियरहिं निजरूप गुमानी। ते लखि वर बिन मोल बिकानी॥
रहेउ न गर्व मान तिन केरो। जब सुखधाम रामछवि हेरो॥
जे दृग अति मृगहूते प्यारे। सुन्दर गुण रहिंगर्व के मारे॥
तेगइँ छिद दृग राम कटाछैं। विवश भईं सुधितननहिं ताछैं॥

जे अबला पतिव्रत को पालैं। ते व्याकुलता फिरैं बिहालैं॥
जे गर्वीली निज छवि आनन। ते बींधीं मनसिजके बानन॥
जेहि रघुनाथ सयन दृग मारे। तेहि सुधि रहिनमदनमतवारे॥
रामरूप लखि जकिरहिं सारी। कामधाम की सुरति बिसारी॥
रघुनन्दन छैला अलबेला। यन्त्रवशी अबलन उरमेला॥

दो० अति सुकुमारि वाम सब सहित सिद्धि अनुरागि।
प्यारी गारी रामसों देन देवावन लागि॥

सो० सुनौ लालजी बात एकसखी बोली बिहँसि।
हम पूँछत सकुचात तुम जनिराखौ गोइकै॥

सुनो भानुकुल कमल दिवाकर। कानन सुनेउ कामअतिसुन्दर॥
तुम यह रूप कहां ते पायो। कीतुमको सोइमनसिजजायो॥
बोली सिद्धिसुनौ रघुनन्दन। तुमनायकत्रिभुवनजगबन्दन॥
अबतो तुम हमरे नन्दोई। जो पूछैं राखहु जनि गोई॥
होतव्याहु मनमुद सब कोई। अपनी जात पांतमा सोई॥
सो भगिनी अपनी प्रभुताही। शृंगीऋषिको कैसे व्याही॥
की उनको ऋषिही लैभाग्यो। की वह ऋषिहीकेसँगलाग्यो॥
इतनी बात बतावो लाला। दीनबन्धु गोविन्द गोपाला॥
रघुवंशीकुल रहेउ अकलंकी। असकहिमवन रही निश्शंकी॥

दो० लषण कह्यो सुनलाड़िली जो बिधनालिखिदीन।
तेहि संयोग होत तहँ व्याहु करम आधीन॥

सो० कहँ हम राजकुमार कहँ वैरागी नृप जनक।
भयो विवाह हमार तुमघर विधिगतिको गनै॥

अवरौ एक हास मन भावै। अतिअचरज सुनि सबकोआवै॥
तुमसिधि वै लक्ष्मीनिधि नाहू। नारि नारि सँग भयो विवाहू॥

एक सखी कह सुनिये लालन। जीतिकोसके तुम्हारे ख्यालन॥
प्रकट अहैं ये सब जगमाहीं। तुम्हरी रीति कोऊ घर नाहीं॥
अतिहि उदार अवधपुर नारी। तीनिलोकते उन गति न्यारी॥
खीरखाय सुत जनमत आहीं। पतिसों कछुक प्रयोजन नाहीं॥
सखी वचन सुनतै रघुराई। बोले मृदुल मंजु मुसक्याई॥
आपन चाल छिपावहु प्यारी। कहौ आनकी बात दुलारी॥
कोनहिं जनम्यो बिनपितुमाता। वेदविदित सब जग विख्याता॥
दो॰ उतपति जग पितु मातुते बँधी वेदकी नीति।
उपजतहैं महिखोदिकै यह तुम्हरे घर रीति॥
सो॰ चन्द्रकला परबीन लहुरी भगिनी सिद्धिकी।
लेति काम मन छीन बातनमें अतिनागरी॥
तेहि अवसर बोली सुकुमारी। सुनौ लालजी बात हमारी॥
तुम तो रहे तपसिन सँगमाहीं। कहौ सो सत्यलाल हमपाहीं॥
यह छलछन्द फन्द कहँ पाये। की मुनिनारिन तुम्हैं सिखाये॥
कीनिजभगिनि संग तुम सीखे। लयो स्वाद कैसे बिन चीखे॥
बोले भरत भली कहि सजनी। अहौ कुंवारि अबै तुम रमनी॥
बातैं नारि पुरुषकी भामिनि। वरण्योकहांसिख्योतुमकामिनि॥
रह मुनिसंग ज्ञान सिखपाये। रहेउ जो कछुअबतुमढिगआये॥
काम कला हमैं देव सिखाई। प्यारी कछु जनि राखु छिपाई॥
सिद्धिकहेउ सुन भरत सुजाना। ऐसी तुम जनि करो बखाना॥
दो॰ कहेउ सिद्धि सुनिये भरत तुमतौ परमसुजान।
तुम्हरी गिनती साधुमा लौकिककृत कहजान॥
सो॰ भरत कहेउ मुसुकाय तुम सांची सब कहतहौ।
हम साधू जसआय सो तुमका सब विदितहै॥

ऐसे साधू हग परकाजी। सेवाकरौ होइ मन राजी॥
आये अयन अपूरब योगी। अधर सुधारस के हैं भोगी॥
अस निजमनप्यारीगुणिलीजै। अधरामृत रस भोजन दीजै॥
पूजन अतिथि करौ तुम ऐसी। कहेउ जो हम तुमसेहैं जैसी॥
यह सुनिकै बोली इकनारी। प्रीति रीतिकी जाननहारी॥
सुन सखि इनकी एक बड़ाई। ऋषि मख राखन गये बुलाई॥
तहां ताड़का इन सुधिपाई। देखिकै इनकी सुन्दरताई॥
काम विवश इनके ढिगआई। भयो न कछु मार्‍यो खिसियाई॥
बोले रिपुसूदन सरहजते। जो करतूति भई नहिं उनते॥

दो० भामिनि दोष न दीजिये करिये सोइ उपाय।
तन धन आपन देखिकै हमसों लेउ भराय॥

सो० भयो तुम्हरे घरब्याहु बिनजाने करतूतिके।
अब करिलेहु उमाहु सो पछिताव न राखिये॥

वैसे हैं वशमाहिं तिहारे। हैं हाजिर सब राजदुलारे॥
सुनि बानी रिपुसूदन केरी। बोली सखि इक और बहोरी॥
कहां सिखी लालन चतुराई। सो हमको तुम देव बताई॥
कीकहुँ मिली गुणागरनारी। कीगणिकन सँगकियेविहारी॥
तीनौ भाइन ते तुम प्यारे। लखियत चिह्न नवीन तुम्हारे॥
रिपुहन कह्यो कौन पहिंचानै। भामिनि भिदिया भेदैजानै॥
तुम्हैं सरिस गणिकौ ते जानैं। सौगुण उनते अधिकै मानैं॥
हम तुम चिह्नतौ एक दिखाई। तामें चहिये अवशि सगाई॥
जैसे हम तैसी तुम प्यारी। भलोयोग विधिरच्यो सवांरी॥

दो० सुनत युक्ति रिपुदवन की बोली श्रीनिधिनारि॥
सुनो रसिक रघुनाथजी आनँदकन्द विहारि॥

सो० मनमोहन तुम राम कामौ मोहत देखिकै।
नगर अवधकी वाम कैसे बचिरहि होयँगी ॥
यह कहिकर फिररही चुपाई। सिद्धिकुँवरि सुन्दरिसुखदाई ॥
ताको हाथ पकर निजपाणी। बोले प्रभु तासों मृदुवाणी ॥
जो मर्याद दई की बांधी। तामोरहत जक्त सब सांधी ॥
कहा रंक औ का अवनीशा। काह यती का सतीमुनीशा ॥
जोगति बांधिदई करतारा। करत सबै हिलमिल व्यवहारा ॥
अनुचित उचित विचारिप्रभाऊ। तहँ तैसो सब राखत भाऊ ॥
तुमतो अपने वश जनतीहौ। पुनि सबहीके भावरतीहौ ॥
यह सुनि भरत लषण शत्रूहन। दैतारी लाग्यो सब हंसन ॥
सिद्धिआदि सब राजकुमारी। तेऊ मन अति भई सुखारी ॥
दो० यहिविधि हंस हँसाय हरि दैदिवाय मृदुगारि।
नाना भाँति मनोरथहि लगी करन सुकुमारि ॥
सो० कहत कछुक लगि कान रामसमीपै जाय कोउ।
कुँवर कपोलन पान परसि जन्मफल पाइकै ॥
कोउकर चरण कमल प्रभुचापै। करति दूर निजतनकी तापै ॥
कोउ गलमाल प्रभूको उतारै। मगन प्रेमवश निज उर डारै ॥
रघुवर मिलन सरिस सुखपावै। पुनि आपनलै प्रभु उर लावै ॥
कोउ चन्दन प्रभुबदन चढ़ाई। पुनि निज तनमें लेत लगाई ॥
अगर सुगन्ध लगावत कोऊ। तनकी तपन बुझावत सोऊ ॥
कोउ करन लैके मृदु अंजन। अंजत आंख राम दृग खंजन ॥
बिलगु न मानै रामरँगीली। जानि सनेही अपन छबीली ॥
कुसुमकली चुनि कोउ प्रवीनी। रचि कलँगी कर प्रभुके दीनी ॥
रामकुँवर कर छुवत नवीनी। थकित रही हरि छविरँगभीनी ॥

दो० कोऊ पान खवायकै पुनि अपने मुख देइ।
प्रीतम प्रीति प्रसादलै प्रेममगन सुख लेइ॥
सो० निज निज मन अनुरूप जाकी जैसी भावना।
देखि सांवरो रूप भई प्रेम मतवारि सब॥
रसिक शिरोमणि श्रीरघुनन्दन। गई चपला कस नेहके फन्दन॥
जस जाके मनरहि अभिलाखा। प्रभु ताकी तैसी रुचिराखा॥
तब रघुनाथ सिद्धिसों बोले। कहि प्रियबचन विनीतअमोले॥
जो तुम हमका देव निदेशू। तब गवनेउ जहँ अवधनरेशू॥
यह सुनि रामकुँवर की बानी। कांपिउठीं सिधिआदि सयानी॥
ब्रह बोहित में हमैं चढ़ाई। लालरूप रस अपन छकाई॥
अब तो आप अवध को जैहैं। हम बिरहिन के प्राण किमि रैहैं॥
नृपकिशोर चितचोर छबीले। चलन चहौ हमैं छोड़ि रँगीले॥
तब कस हमसों प्रीति लगाई। हमैं मारिचहौ अवध सिधाई॥
दो० की तुम येही बदरखी जब जैहौ ससुरारि।
करिहौ कतल त्रियान को मारि प्रीति तरवारि॥
सो० तुम मानी नहिं कान हम अवध्य सब भांतिसों।
मारयो नयनन बान भौंहकमानै तानिकै॥
सुनिये रसिकराय रघुराई। लोकलाज कुलकान बड़ाई॥
यह तो नाथ क्षणहिंमा टूटै। लगी प्रीतिपै कबहुँ न छूटै॥
ऊंच नीच जग कौनिउजाती। जासु सनेह लगन लगिजाती॥
मिटै न तरस दरश बिन देखे। कोटिन करै उपाय विशेखे॥
तरसत रहत सदा दृगदोऊ। नहिं मानत बिन देखे सोऊ॥
बोलन हँसन चलन पियप्यारे। होत हियेते तनक न न्यारे॥
तेउ तासु मिलिबे की आसा। लालन रहत सम्हर उरपासा॥

यह जग बहुत पुरुष हम देखे। सुन्दर सुघर सुजाति विशेखे ॥
बिनदेखे निज प्यारे यारके। होत न शीतल छाती नारि के ॥
दो० क्षण क्षण विरह दहत तन नयन लगन जेहिलाग।
ज्यों चूनै लै कांकरी जब छिरकै तब आग ॥
सो० गनत न नीत अनीत निशिदिन ताही में मगन।
जिनके हाथ विनीत प्रीति रीतिते जानहीं ॥
भरिभरि आवैं नयनन नीरा। वह दुख दाहत सकल शरीरा ॥
प्रीतिमान पहिचानै प्यारे। प्रीतिवान की पीर निहारे ॥
त्यागै जक्त सकल सुख भोगू। दैव न देव पियाको वियोगू ॥
देव यही वर तुमकर छोहू। होय न कबहुँ पियासों बिछोहू ॥
परवश परि औसर वशखोई। अवशि भिखारी सब तजिहोई ॥
वरु जलमध्य जन्मभर बसिये। करि तपयोग जाप तनकसिये ॥
पै सपनेउ बिछुरै न विधाता। जासों आपन तनमन राता ॥
कर्म्म धर्म्म त्यागै जगसारो। फिरै प्रेमवश नित मतवारो ॥
देव विधाता वर हमैं येही। बिछुरै न कबहूं अपन सनेही ॥
दो० वरु मुख भस्म लगायकै खाय मांग जगटूक।
पै करतार यार सों परै न कबहूँ चूक ॥
सो० सब तजि होइ भिखारि जातिपांति सब खोइकै।
होइ न कबहूं न्यारि पियसूरति इन नयनसों ॥
जेते सुख शुभ सब जगमाहीं। पियबिछुरतडल सम होइजाहीं ॥
यद्यपि हम अबला जड़ जाती। अतिअज्ञान नीच सब भांती ॥
जो लगिजाय प्रीति सँगजासों। बिकजाती हमहूं करतासों ॥
नित स्वारथ रत चलैं अनीती। कपट न राखैं जासों प्रीती ॥
हम त्रियनीच मीचकी खानी। बोलैं सदा असांची बानी ॥

जासों प्रेम प्रीतिरस चाखैं। ताको तन मन सबदै राखैं॥
पति पितु पुत्र बन्धु गुरुजनतें। सन्तत न्यारिरहैं सबनतें॥
पै कछु बीच न राखैं तासों। बांधैं प्रीति डोरिसँग जासों॥
हमते नीच और नहिं होई। तुमसम रघुवर ऊंच न कोई॥

दो० विनय प्रभू सुनिलीजिये तुम समान नहिं कोय।
पै यह प्रीति जो तौलिये गरु हमारी होय॥

सो० सुने त्रियनके बैन तरुन करुन रस में भरे।
भरिआये जलनैन प्रीतिरीति पहिचानिकै॥

बोले वचन भक्तभय भंजन। कृपासिन्धु सन्तन जनरंजन॥
सुनौ त्रिया अब तुम सब कोई। कहौं प्रकृति निज राखौंगोई॥
शिवसनकादि आदिमुनिनारद। जे मुनिवर विज्ञानविशारद॥
इनते और बड़ो नहिं कोई। वेद पुराण विदितहै सोई॥
तिनहुनते तुम अधिक पियारी। सुनि लीजै सिधिराजकुमारी॥
करै प्रीति जो मोसों कोई। होय जो जान अजानो सोई॥
प्राणसमान ताहि मैं जानौं। अवगुण ताके एक न मानौं॥
मेरी है यह बानि पियारी। प्रीतिवान जन जानैं विचारी॥
नहिं खोजे पावैं मोहिं प्रानी। करिजप योगध्यानतपज्ञानी॥

दो० हिमतनदहै न कहै कछु पुनि तेहिलखिमुदमान।
ऐसी पीड़ा कमलकी वासरपति कह जान॥

सो० सुनियत बड़ी बड़ाय जिन प्राणिन की जक्तमें।
सबमें एक खुटाय तिन विचार जो देखिये॥

तरसत रहत सदा बिनपाये। तकितचकोरनशशिकछुभाये॥
लखि घनघटा नृततछकिमोरा। तनकपीर नहिं मेघकठोरा॥
पिवपिव चातक टेर लगावै। पियके जीव दया नहिं आवै॥

सरबस तजिकै प्रीति बसाई। देखौ मीन कि ऐसि मिताई॥
जलको छांड़त नहिं दिनराती। जलकी फाटत तनक न छाती॥
जरत पतंग दीपसँग माहीं। दीपकमयी दया कछु नाहीं॥
प्रीतिवान बहुतक अस देखे। धीरज दया न जिन अवरेखे॥
एक प्राण तेहि ऊपर देई। एक न जानत पीड़ा तेई॥
ऐसी नहिं है प्रीति हमारी। सुनौ सिद्धि सुखधामपियारी॥
दो० प्रीतिमान प्रियतमहिं को पलभर तजौं न पास।
निशिदिन ताके सँगफिरौं याहि हमारी बास॥
सो० जो कोउ गर्व दिखाय छोटमान मेरे यारको।
व्रह्मौं माथ नवाय ऐसो बड़ो बनाय तेहि॥
सगरे लोकन औ सब ठाऊं। सबहीसे मैं ताहि पुजाऊं॥
ब्रह्मादिक की कहा चलाऊं। मोहुँ ताके निज माथ नवाऊं॥
पुनि तासों कछु भेद न राखों। यद्यपि चूककरै वह लाखों॥
राजसाज सुत धन वैदेही। सबते प्रिय मोहिं यारसनेही॥
केतौ विपति सहौं शिर अपने। पैनिजयार न त्यागौं सपने॥
नाना रूप धरौं तिनहेतू। वनवन फिरौं सहत दुखकेतू॥
गीध कबंध अजामिल गणिका। शबरि विभीषण सूपच बंका॥
जामवंत हनुमत कपिराऊ। ये सब जानैं मोर सुभाऊ॥
जो जन ममपद बांधै प्रीती। रहौंदासहोइ मम असनीती॥
दो० मोसों प्रीति लगायकै करै और की आस।
कोटिन यत्न करै वह मैं न जाउँ तेहि पास॥
सो० मन्त्रभाव हियलेख प्रेमपरायन मुदकरन।
कल न परै बिनदेख ऐसे प्रीतम यारके॥
मनमें स्वारथ मुख परमारथ। तिनकी गति मैं कहौं यथारथ॥

कपट प्रेम मनमें दरशावत। ऐसे मीत सपनेहु नहिं भावत॥
महाप्रलय जब जगकी होई। तामों बचत नहीं है कोई॥
पै मेरे प्रीतम की सुन प्यारी। कबहुँ नाश नहिं राजकुमारी॥
जाको हौं मैं जग रखवारा। ताको कवन है मारनहारा॥
चहौं अथापन जाको मोहीं। तेहि को थपै सत्य कहौं तोहीं॥
तनकौ जासु मैं चहौं भलाई। ताकी करैं सबसुर सेवकाई॥
क्षणमें रंक विरंचि बनाऊं। क्षणमें विरंचिहि रंक कराऊं॥
राईको क्षणमें शैल बनाई। करौं शैलको क्षणमा राई॥

दो० सुनु प्यारी मैं कहतहौं बात एक पुनि सांच।
शिव सनकादि ब्रह्मादिको तिन्हैं नचाऊं नाच॥

सो० योगसिद्ध चतुराइ कर्म्म धर्म्म औ धीरता।
राजनीति निपुणाइ ज्ञान ध्यान विज्ञानता॥

इनते जीतिसकैं मोहिं नाहीं। कोटि उपाय करैं मनमाहीं॥
हारिजाउँ प्रेमी पुरुषन ते। तहँ न बिसाय मोरकछु उनते॥
ते तुम सबै प्रेमकी मूरति। बलिहारी तुम ऐसी सूरति॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी। प्रियामोहिं प्राणहुँते प्यारी॥
तुम हियकी अभिलाष बुझैहौं। प्यारी तुमते बिलग न ह्वैहौं॥
लोकलाज मर्याद बचैहौं। मनकि कामना तुम्हरि पुजैहौं॥
हम सब भांति तुम्हारे प्यारी। हौतुमहूं सबभांति हमारी॥
सत्य सत्य सबसत ममबानी। सुनौ सिद्धि तुम परमसयानी॥
तुमहूँ अब कछु अन्त न मानौ। मोरकहा अपने मनआनौ॥

दो० सुनत वचन रघुबीरके खुलिगये कपट किवार।
बाढ्योप्रेम त्रियानमन रह्यो न तिनहिं सम्हार॥

सो० भूलगईं सब बाल सुनिबानी प्रभु सुखकरन।

तनको रह्यो न ख्याल नहिं जानत हमकौन हैं॥
पुनि धरिधीर जोरियुग पाणी। सिद्धि आदि बोलीं मृदुवाणी॥
धन्य भाग हमरे जग माहीं। हमते और बड़ो कोउ नाहीं॥
बूड़तरहीं विरह दुखसागर। राखिलीन्ह गहिकर करुणाकर॥
हमनारी सब भांति अनारी। कीन्ह प्रीति मुदमङ्गल कारी॥
रामकुमार तुम्हारे बरोबर। कीन्हकृपा नहिं कोउ हम ऊपर॥
प्रति उपकार न हमसों होई। जसतुमकृपा कीन्हप्रभु सोई॥
चन्द्रसमान होइँ नहिं तारे। कबहुँ जुरैं जो लाखनतारे॥
जेहि जेहि योनि कर्मवश त्राता। देइ जन्म जो हमैं विधाता॥
तहँतहँ रसिक राय रघुनायक। मिलौसनेही सब सुखदायक॥
दो० बरु विधिकरै तनयातना छूटै क्षण क्षणदेह।
कौन्यो जन्म नहीं छुटै हमतुमनाथ सनेह॥
सो० सुनि करुणा रस ऐन अंतर यामी जगतके।
कहि कहि कोमल बैन सनमानेसिधि आदिदै॥
सबसे विदा मांगि रघुनाथा। धारेचरण अनुज सब साथा॥
सिद्धि महलते कढ़ि प्रभुआये। मानौचारु चन्द्र छविछाये॥
पानखवाय करति मुखबैना। साथैचली सिद्धि सुखऐना॥
राजमहल आये रघुराई। जहां सुनयना मातु सुहाई॥
चरण प्रणाम कीन्ह सुखदानी। बिदाहेतु बोले मृदुबानी॥
सुनि अस बयना सासुसुनयना। भरिआये जलकोयन नयना॥
रहौकि जात न कछु कहि आवै। जनौकृपिननिधि राशिगवांवै॥
पुनि धरिधीर सुनयना रानी। बड़े मोलके भूषण आनी॥
अनुज सखनयुत रामहिं दीन्हो। हर्षसहित करनिजप्रभुलीन्हो॥
दो० वसन विचित्र पवित्र सुठि पहिराये जगदीश।

पाय पोशाक नायशिर मुदित लही आशीश ॥
सो० प्रेम पियासी नारि हम रावर की किंकरी।
आपनि वृत्तिविचारि हमपर छोह न छांड़िये ॥
भरिदृग जल बोले सुखकारी। हम तुम्हार वदिसुनसिधिप्यारी॥
अस कहिबोध दियो बहुभांती। गई महल धरिधीरज छाती॥
अनुज सखनयुत पुनि रघुराई। जनक सभा सब पहुँचेजाई॥
सादर कीन्ह चरण परनामा। पाय रजाय चले सुख धामा॥
श्रीनिधियुत अवधेश कुमारा। आयेनिकसिनिमिपजदुआरा॥
जानि तयारी सेवक आये। वाहन तिन बहुभांति लगाये॥
कोउ तुरंग कोउ मतँग सवारा। कोउ सुखपाल चढ़े सुकुमारा॥
कोउ सुन्दरस्यन्दन चढ़ि राजे। बाजन बिजै त्रिविधविधिबाजै॥
फहरैं ध्वजा नकीब पुकारैं। चहुं दिशिते जूगर उच्चारैं॥
दो० कोउ कोउ छत्रकि छांहकरि कोऊ पानखवाय।
रोम चमरदोउ ओर ते कोउ डुलावति जाय॥
सो० चलेचढ़े सुखपाल इमिरचना युत सुखसदन।
जनक नगरकी बाल चढ़ी अटापर देखहीं॥
ललकि झरोखन झांकनलागीं। श्यामल मूरतिलखि अनुरागीं॥
कोउ कोउ दरशै छज्जन छातैं। कोउ काहूसों करति इमिबातैं॥
गौरवरण जस जनक किशोरी। श्याम रूप तस रामकिजोरी॥
कोकह कवन जन्म धौंप्यारी। पुजिहैं मन अभिलाष हमारी॥
करिबातैं प्रभुसों कोउ नारी। मिलन हेतु प्रभुभुजा पसारी॥
कोउ कह धन्य राजकुल नारी। कीन्हीं पूर्व्व पुण्य भल भारी॥
हँसहँसाय प्रभुसों परवीनी। जन्म सुफल आपनकरलीनी॥
धन्य जन्म जग जनक कुमारी। पायो वर त्रिभुवन सुखकारी॥

कोउ कह कहां कुंवर रघुवंसी। तीन लोकजिनकी परशंसी॥
दो० केहिविधि होइ मिलन हरि हममति मन्दगवांर।
बीत्यो जन्म वृथाही विरचि बादि करतार॥
सो० मरौ शोचि कितनारि होत वही जो भागमें।
भरिदृग लीन्ह निहारि जितनो रह्यो सँयोग हम॥
सुनी त्रियनकी आरत बानी। प्रेमभक्ति करुणारस सानी॥
तिनके दिशिचितयो किरपाला। करिप्रबोध प्रभुदीनदयाला॥
इमिमग बहुविधि करत विलासा। पहुँचे कुँवर सबै जनवासा॥
गोपितु पास उतरि सुखधामा। अनुज सखनयुतकीनप्रणामा॥
पूछत भूपलाय उर लीन्हा। रामकलेवा केहिविधि कीन्हा॥
रायरजाय राम जब पाई। कहियो प्रभु सब सहज सुभाई॥
सो सुनिमुनि दशरथ नरनाहू। लह्यो अमित मुदमंगललाहू॥
नृप रजाय गवने निज बासू। जहँ सबको सबभांति सुपासू॥
अति बड़भाग जनक पुरवासी। नित नवसुख पावत सुखरासी॥
दो० कोटिइन्द्र नहिं लखिपरत निरखत यह सुखभोग।
धन्य सुकृत मिथिलापति जिनकीन्ह्यो असयोग॥
सो० पावत निगम न पार शिव चतुरानन शारदा।
प्रभुगुण उदधिअपार लालमनी किमि कहिसकै॥
भाषाललित सोकवि कृततुलसी। अनुदिनरहतसोममहियहुलसी॥
तेहि भरोस बल बुद्धिढिठाई। बंदि चरणयुग हर सुखदाई॥
संवत उनइससै औ तीसा। सुमिरिसिद्धि गणपतिगौरीसा॥
ग्राम हमीरपूर मन भावन। बहत निकट यमुना जलपावन॥
तहँ वैशाख पक्ष उजियारा। कीन्ह कथा भगवत उपचारा॥
मास अषाढ़ कृष्ण पखवारा। शुभतिथि तीजसुदिनभृगुवारा।

रामकलेवा करि सम्पूरण । लह्यो जन्मको सुख भरपूरण ॥
कहैं सुनैं जे हरिगुण प्यारो । ताको सीता राम हमारो ॥
भूल चूक जोपै कहुँहोई । लेउ सम्हारि सुजन तुमसोई ॥
दो० रामकथा कलिमल हरण कहैं जो नरधरिध्यान ।
तिनके मनकी कामना पुरवैं श्री भगवान ॥
सो० करै जो हरिगुण गान रसिक शिरोमणिरामके ।
बिनैयोग जपदान सुमिरिनाम भवनिधितरै ॥

इति श्रीरामकलेवालालमनीकृत
समाप्तंशुभमस्तु ॥

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने लखनऊमें छपी ॥
अगस्त सन् १९०४ ई० ॥